द्वितीय अध्याय

2.0 उपन्यास का उद्भव और विकास

उपन्यास का अर्थ: आधुनिक साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिंदी उपन्यास के पहले चरण में उपन्यासों का उद्देश्य मनोरंजन समाज सुधार ही रहा है। हिंदी उपन्यास का इतिहास हिंदी कहानी के इतिहास के समकक्ष ही शुरुआत मानी जाती है। इस विधा का शुभारंभ बीसवीं शताब्दी के पहले चरण में हुआ है।'भारतेंदु युग'को हिंदी उपन्यास का प्रणेता माना जाता है परंतु इस युग के पहले ई. स 1877 में श्रद्धा राम फुलौरी ने 'भाग्यवती' उपन्यास की रचना करके इस विधा की शुरुआत कर दी थी। हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित उपन्यास 'परीक्षा गुरु' उपन्यास को मौलिक उपन्यास माना है और इस बात को स्वीकार किया है कि यह हिंदी साहित्य का प्रथम उपन्यास हैं प्रेमचंद के आते ही इस विधा में एक नई चेतना का उद्भव हुआ।

"उपन्यास उप+न्यास दो शब्दों का जोड़ है जिसके उपसर्ग का अर्थ यह निकलता है समीप होना और न्यास का अर्थ होता है 'धरोहर' इस आधार पर हम यह तथ्य जान सकते हैं कि लेखक अपने आसपास की सामाजिक घटनाओं को अपने विचारों, कल्पना और सूझबूझ के साथ जीवन से जोड़कर हमारे सामने इस साहित्यिक विधा को उपलब्ध करवाते हैं।"[1] उपन्यास की कथावस्तु कभी जीवन से जुड़े, कभी कल्पना मातृत्व, कभी यथार्थ के धरातल पर आधारित होती है। उपन्यास एक ऐसी विधा है जिससे मनुष्य अपने आप को इस विधा के पात्र, काल, परिस्थितियों को अपने साथ जोड़कर अनुकूलता पाता है।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास तेज गति से प्रारंभ हुआ। अंग्रेजी मराठी, बंगाली साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों से हिंदी उपन्यास कारों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया।इस काल में मौलिक उपन्यासों की भी रचना हुई ।भारतेंदु जी ने अन्य भाषाओं के उपन्यासों का हिंदी

में अनुवाद किया।श्रीनिवास दास का सामाजिक उपन्यास जो मौलिकता पर आधारित है जिसका नाम है 'परीक्षा गुरु', बालकृष्ण भट्ट के उपन्यासों में 'सौ अजान एक सुजान' और " नूतन ब्रह्मचारी "समाज में प्रचलित हुए। राधा कृष्ण दास का 'निसाहाय हिंदू परंतु दुर्भाग्यवश भारतेंदु जी ने जो उपन्यास लिखना प्रारंभ किया वह पूरा नहीं कर पाए।अंग्रेजी और मराठी भाषाओं के कई उपन्यासों को हिंदी में अनुवाद किया गया। उस काल में 'तिलिस्म ऐयारी' के उपन्यास काफी मात्रा में बहुचर्चित थे।बाबू देवकीनंदन खत्री के उपन्यास के लिए प्रसिद्ध नाम है।उपन्यासों की रचना के दौरान पढ़ने वालों और रचना करने वालों की संख्या में दिन-ब-दिन वृद्धि होती गई ।पाठक ऐसे उपन्यासों को बड़े ही शौक से पढ़ते थे। जासूसी उपन्यासों के लिए गोपाल राम गहमरी का नाम उल्लेखनीय है। किशोरीलाल गोस्वामी ने अपना सिक्का जमाया था।उस काल के दौरान ही ऐतिहासिक उपन्यास भी रचना की गई जिसमें 'रजिया बेगम', मुकेश मिश्र बंधुओं का 'वीरमणि' उल्लेखनीय उपन्यास माना जाता है ।देखा जाए तो बीसवीं शताब्दी के अंत तक सारे प्रकार के उपन्यासकार इस धरातल पर शामिल हो गए थे।बीसवीं शताब्दी के अंत तक दूसरे दर्शकों के सभी विषय के उपन्यास मिल जाते हैं ।उस काल के उपन्यास देखे तो अधिक गुणवत्ता वाले उच्च कोटि के साहित्य का अभाव देखा जाता है।

हिंदी साहित्य में उपन्यास साहित्य के इतिहास को विभागों में बाँटा गया है।

(1) प्रेमचंद पूर्व युग में हिंदी उपन्यास (1870 से 1916 तक)

(2) प्रेमचंद युग के हिंदी उपन्यास (1917 से 1936 तक)

(3) प्रेमचंदोत्तर युग के हिंदी उपन्यास (1936 से 1960 तक)

(4) आधुनिक युग

(1) प्रेमचंद पूर्व युग: 1870 से 1916 के समय काल को प्रेमचंद पूर्व युग माना जाता है।इस समय सामाजिक, तिलिस्म, ऐय्यारी, जासूसी और प्रेमाख्यात्मक, ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना होती थी।

हिंदी उपन्यास साहित्य का प्रथम उपन्यास किसे माना जाए इस बात को लेकर कहीं विद्वानों में मतभेद देखने को मिलते हैं। परंतु इस बात का हम विरोध नहीं कर सकते कि प्रेमचंद पूर्व ही उपन्यास लेखन का दौर चल पड़ा था। कुछ विद्वान उपन्यास मानते हैं परंतु इसके की कहानी को हिंदी का प्रथम 'रानी केतकी' रचयिता इंशा अल्लाह खां इसके शीर्षक में ही कहानी शब्द को जोड़कर संभावना को मिटा डाला।'भाग्यवती' को हिंदी का प्रथम उपन्यास कुछ विद्वान मानते हैं परंतु इसमें उपन्यास के तत्व का अभाव होने के कारण वश उपन्यासों की श्रेणी में से इसे हटा दिया गया। इसकी रचना "ई.सन 1872 में श्रद्धा राम फुलौरी ने की थी।आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'परीक्षा गुरु' को हिंदी उपन्यास का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है परंतु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतेंदु द्वारा रचित 'पूर्ण प्रकाश' और 'चंद्रप्रभा'को हिंदी उपन्यास का पहला उपन्यास मानकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल के 'परीक्षा गुरु' को प्रथम उपन्यास मानने की बात का खंडन किया। आचार्य द्विवेदी ने दो उपन्यासों को भले ही हिंदी उपन्यासों का प्रथम उपन्यास माना हो परंतु कुछ विद्वानों का मानना है कि इन उपन्यासों का मराठी और बांग्ला भाषा से हुआ है।"[2] कुछ विद्वान बहुत समय तक 'परीक्षा गुरु' को ही हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते रहे लेकिन बाबू गुलाब राय इसे हितोपदेश की परछाई कहते हैं जिसमें बीच में श्लोकों का और उपदेशात्मक रचना लगती है जो इस रचना को उपन्यासों की श्रेणी से दूर कर देती है। इस काल में 'सौ अजान एक सुजान', 'निस्सहाय हिंदू', 'नूतन ब्रह्मचारी', उपन्यास प्रसिद्ध रहे इसके अलावा 'लबंग लता', 'सास पतोहू', 'सुशीला और लज्जाराम मेहता का धूर्त' रसिकलाल' चर्चा में बने रहे।इस काल के प्रसिद्ध उपन्यासकारों में देवकीनंदन खत्री, गोपालदास गहमरी, किशोरी लाल गोस्वामी बाबू बृजनंदन सहाय आदि है। देवकीनंदन खत्री का समय 1861 से 1913 तक माना जाता है ।उनके उपन्यासों का आधार तिलिस्म ऐय्यारी होता था। उनके उपन्यासों का पठन करने के लिए लोगों ने हिंदी भाषा का अध्ययन किया ताकि वह उपन्यासों का आनंद ले सके।

इनके उपन्यासों में 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति' भूतनाथ (प्रथम छः भाग) 'कुसुम कुमारी', 'नरेंद्र मोहनी', 'गुप्त गोदना', 'वीरेंद्र वीर', 'काजल की कोठरी'प्रसिद्धि प्राप्त उपन्यासों में शामिल है। जासूसी उपन्यासों के लिए गोपालदास गहमरी को जाना जाता है ।उन्होंने अपने समय में 'जासूस' नामक पत्रिका भी निकाली थी और इस पत्रिका में वह जासूसी उपन्यासों और कहानियों को प्रकाशित करते थे। “किशोरीलाल गोस्वामी 1865 से 1932 साधारण जनता को केंद्र में रखकर उपन्यासों की रचना करते थे जिसके पाठकों की अभिरुचि को बढ़ावा मिला । उनके द्वारा रचित उपन्यासों में 'कुसुम कुमारी','अंगूठी का नगीना', 'लखनऊ की कब्र', 'चपला', 'तारा', 'प्राणदायिनी' आदि उपन्यास जाने-माने हैं इन उपन्यासों में साहित्यिकता की प्रधानता के कारण सामान्य प्रजा की रुचि को उत्पन्न ना करके केवल बौद्धिक वर्ग की अभिरुचि को ही बढ़ाया था।”[3] “बाबू बृजनंदन सहाय ने अपने जीवन काल में चार उपन्यासों की रचना की जिसमें 'सौंदर्य उपासक', 'आदर्श मित्र' प्रसिद्ध है परंतु इन के उपन्यासों में चरित्र चित्रण की अपेक्षा भाववेश का अधिक समावेश किया गया था।”[4] इन उपन्यासकारों के अलावा सामाजिक उपन्यासों को छोड़ दिया जाए तो प्रेम विषय पर भी उपन्यास लिखे जाते थे जैसे 'तरुण तपस्विनी', 'लीलावती', 'चंद्रावती'में भीम प्रेम का सहारा लिया है।इस कालखंड में ऐतिहासिक उपन्यासों की भी रचना की गई।बृजनंदन सहाय ने 'लालचौन' उपन्यास में गयासुद्दीन बलबन के एक गुलाम की कहानी लिखी है। मिश्र बंधुओं ने 'वीरमणि' अधिकांश उपन्यास घटना प्रधान,मनोरंजक, कौतूहल वर्धक होते थे। प्रेमचंद ने देवकीनंदन खत्री की व्यवहारिक भाषा शैली को ही अपने साहित्यिक का आधार बनाया है।

2.0.1 प्रेमचंद युग के हिंदी उपन्यास:

हिंदी उपन्यास के साहित्य में प्रेमचंद के आगमन के साथ ही एक नई क्रांति की शुरुआत हो गई। इस काल के उपन्यासकारों ने उपन्यासों को यथार्थ के धरातल पर जाकर उन्हें प्रस्तुत किया। ई. सन 1918 में प्रेमचंद ने 'सेवासदन'उपन्यास की

रचना की। उसके पूर्व प्रेमचंद जी ने जो उपन्यास लिखे थे वह आदर्शवाद के धरातल पर आधारित थे लेकिन बाद में यथार्थवाद को अपने उपन्यासों में अधिक महत्त्व दिया। इस युग के मुख्य उपन्यासकार होने के कारण कई उपन्यास कारों के लिए वह प्रेरणा स्त्रोत की तरह क्रियान्वित थे।

प्रेमचंद युग का कालखंड ई. स 1917से 1936 तक माना जाता है।प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को एक नई दृष्टि प्रदान की थी। प्रेमचंद जब साहित्य की रचना कर रहे थे उस समय देश की राष्ट्रीय आंदोलन का दौर चल रहा था। प्रेमचंद के उपन्यासों में हम तत्कालीन सामाजिक वातावरण देख सकते हैं। उनके उपन्यासों में राजनीतिक परिस्थितियों का भी चित्रण स्पष्ट नजर आता है उनके उपन्यास प्रेमाख्यानों, तिलिस्मी प्रभाव से कोसों दूर थे उनके उपन्यास कल्पना की धरातल पर आधारित न होकर यथार्थ की नींव पर आधारित थे वास्तविकता और मानव जीवन से संबंधित होते थे ।इनकी प्रथम श्रेणी में आने वाले उपन्यासों में 'प्रतिज्ञा' और 'वरदान' है जो उन्होंने आरंभ में रचे थे उसके बाद दूसरे चरण में 'सेवासदन', 'निर्मला' और गबन आते हैं। तीसरी श्रेणी के उपन्यासों में 'प्रेमाश्रय', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प','कर्मभूमि' और 'गोदान' है उनके उपन्यास किसी वर्ग विशेष से जुड़े न होकर समाज के हर वर्ग तक फैले हुए हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में कई समस्याओं को उजागर किया गया है जैसे दहेज प्रथा, वृद्धावस्था की समस्या, शंका और विश्वास भारत की तत्कालीन राजनीति में समस्या, किसानों की समस्या, पुनः विवाह की समस्या, अंधविश्वास आदि को अपने उपन्यासों में यथार्थ चित्रण किया है। इनके द्वारा रचित उपन्यास गोदान को तो उपन्यासों का महाकाव्य कहा गया है।प्रेमचंद युग के दूसरे महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार के रूप में हम जयशंकर प्रसाद को देखते हैं उनके उपन्यासों में सुधारवाद मूल मंत्र रहा है 'कंकाल', 'तितली''इरावती' इनकी श्रेष्ठ रचना मानी जाती है। जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली प्रेमचंद से अलग है उनकी भाषा में दार्शनिकता, स्वभाविकता झलकती है प्रेमचंद के नक्शे कदम पर चलने वाले लेखक के रूप में हम

विश्वंभरनाथ कौशिक को देखते हैं क्योंकि उनका वर्णन,कथाकथन, पात्रों का चरित्र चित्रण सब प्रेमचंद से काफी मिलता है।विश्वंभरनाथ की रचनाएँ मन को आंदोलित करती है 'मां'और 'भिखारिणी'ने इनके द्वारा रचित उपन्यास है। चतुरसेन शास्त्री, बेचन शर्मा उग्र, ऋषभचरण जैन प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकार है।जिनके उपन्यासों में केवल यथार्थ का नग्न चित्र नहीं दृष्टिगत होता है इनकी नजर केवल वेश्यालय और मदीरालय पर ही रही है। प्रेमचंद के पूर्व बहुत से लेखकों ने उपन्यासों की रचना की परंतु उन लेखकों में हमें ऐतिहासिकता के ज्ञान का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।ऐतिहासिकता को महत्त्व देते हुए वृंदावन लाल वर्मा का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है उनकी रचनाओं में 'गढ़कुंडार' और 'विराट की पद्मिनी' उपन्यासों ने इतिहासिक उपन्यासों को एक नया मोड़ दिया है। भगवती चरण वर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'चित्र लेख' में उन्होंने के विषय में चर्चा की है और उसका बड़े ही सुंदर भाव से विवेचन किया है।

2.0.2 प्रेमचंदोत्तर युग (1936 से 1960)

ई. सन 1936 के बाद के समय को प्रेमचंद उत्तर युग माना जाता है।इस युग के उपन्यासों में व्यक्ति का मनोविश्लेषण जैसी प्रवृत्ति को महत्त्व दिया गया। इस युग में एक पात्र को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते हुए उसके उदय के भावों, प्रेरणा और रहस्य का उद्घाटन और विश्लेषण करना एकमात्र उपन्यासकारों का काम रह गया था।सामाजिक समस्या उपन्यासों में दिखाई देती थी परंतु केंद्र स्थान में व्यक्ति ही दृष्टिगत होता था।समाज का स्थान उपन्यासकारों ने गौण कर दिया था। इस नए प्रवाह के प्रवर्तक के रूप में हम जैनेंद्र को देखते हैं इनके द्वारा रचित उपन्यासों में 'तपोभूमि', 'सुनीता', 'कल्याणी','त्यागपत्र'आदि उपन्यास है। इलाचंद्र जोशी का उपन्यास 'सन्यासी'एक श्रेष्ठ रचना है इन्होंने अपने उपन्यासों में फ्राइड और एडरर के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को आधार बनाया 'शेखर एक जीवनी' के द्वारा रचित कलाकृति में एक

व्यक्ति विशेष के जीवन की अतीत की घटनाओं को आधार बनाया है इसमें मनोरंजन का अभाव हैं।

यशपाल के उपन्यासों में मार्क्सवादी सिद्धांत देखने को मिलता है उनके उपन्यासों में 'पार्टी कामरेड', 'मनुष्य के रूप में', 'देश विद्रोह', 'दादा कामरेड' है इन उपन्यासों में कम्युनिस्ट पार्टी को अधिक महत्त्व प्रदान किया है। रामेश्वर शुक्ल ने 'नई इमारत', 'उल्का', 'मरू प्रदीप' जैसे उपन्यास लिखे हैं वृंदावन लाल वर्मा जैसे उपन्यासकारों ने उस समय ऐतिहासिक उपन्यासों की लगातार रचनाएँ कि उनके सुप्रसिद्ध उपन्यासों में 'झांसी की रानी' और मृगनयनी' मुख्य है।चतुर सेन की 'वैशाली की नगरवधू' ऐतिहासिक सर्वोत्तम कृति है। गोविंद बल्लभ का उपन्यास 'अमिताभ' गौतम बुद्ध के जीवन पर आधारित है यह उपन्यास चरित्र को दर्शाता है।

2.0.3 आधुनिक युग

स्वतंत्र भारत में जितनी तेज गति से उपन्यास विधा का विकास हो रहा है उतना साहित्य में किसी विधा का दृष्टिगत नहीं हो रहा। आधुनिक हिंदी साहित्य में उपन्यासों का अपना अलग साम्राज्य है जो साहित्य जगत पर अपना राज चला रहा है।उपन्यासों की रचना तेज गति से आगे बढ़ती ही जा रही है हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित कर देने के बाद अन्य भाषा के विद्वान भी हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित हुए।भारतेंदु युग में उपन्यासों के अनुवाद का प्रवाह बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था। परंतु प्रेमचंद युग में आकर इसका प्रवाह थोड़ा मंद गति को प्राप्त हुआ। उपन्यास कारों में मौलिक उपन्यास लिखने के अधिक उत्कंठा जागृत हुई और आज के आधुनिक युग में उपन्यासों के भाषान्तर करने का दौर प्रारंभ हो चुका है भारत में बोले जाने वाली अन्य भाषाओं के उपन्यासों का अनुवाद हिंदी में किया जा रहा है।

आधुनिक युग में आधुनिकता वादी विचारधारा का निरंतर प्रवाह चल रहा है, शहरीकरण और पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण पारंपरिक मूल्यों को बिखरते

हुए देखा जा सकता है। मनुष्य के जीवन में खुशी और आनंद के स्थान पर निराशा, हताशा और कुंठा ने अपना स्थायी अस्तित्व कायम कर लिया है।1970 के दशक में आधुनिकता का ज्ञान होता चला गया इसके अंतर्गत मोहन राकेश कृत 'अंध बंद कमरे', 'न आने वाला कल' निर्मल वर्मा कृत 'वे दिन' राजकमल चौधरी का 'मरी हुई मछली', 'शहर था शहर नहीं था', महेंद्र भल्ला का 'एक पति के नोट्स' उषा प्रियंवदा का 'रुकोगी नहीं राधिका' ममता कालिया कृत 'बेघर' गिरिराज किशोर का 'यात्राएँ' आदि उपन्यासों में व्यक्ति अकेला,व्यस्त जीवनशैली, थका हारा जीवन जिसका कोई भविष्य ना हो उनमें आशा-उत्साह का नामोनिशान दिखाई देता 'वे दिन उपन्यास' में द्वितीय विश्वयुद्ध का दर्शन होता है युवा पीढ़ी में निराशा,अकेलापन, भय,कुंठा आदि का चित्रण देखने को मिलता है मोहन राकेश के उपन्यासों में जीवन की त्रासदी चित्रित है, 'मरी हुई मछली'उपन्यास में स्त्री की देह-गाथा को अंकित किया है।मन्नू भंडारी के उपन्यास में 'आपका बंटी' में उच्च मध्यमवर्गीय जीवनशैली और आधुनिकता का बोध है।

आठवें दशक तक आते-आते प्रगतिवाद विचारधारा का आरंभ हुआ।इस काल में मध्यमवर्गीय समाज की जीवन शैली का उन्मुख वर्णन देखने को मिलता है, व्यंग्य, फेंटेसी, क्रांति, विद्रोह आंदोलन का भाव, असहाय परिस्थिति में से मुक्ति की राह दिखाने का प्रयत्न किया गया है।जिसमें श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी' व्यंग्य आधारित उपन्यास है।'चूहे की मौत' फेंटेसी पर आधारित है। भीष्म साहनी का 'तमस' रामदरश मिश्र का 'अपने लोग' मनु भंडारी का 'महाभोजमार्क'डेय का 'अग्नि बीज' उल्लेखनीय उपन्यासों में आते हैं।

इस काल में किसी खास प्रवृत्ति या विचारधारा का पालन नहीं किया इस काल के उपन्यासों में विषय गत विविधता दृष्टिगत होती है। वर्तमान काल के उपन्यासकार सीमित जीवन अनुभव और बंधन से मुक्त हैं उनके उपन्यासों में नवीनता, प्रयोगशीलता दृष्टिगत होती है ।इस दशक के उपन्यासकारों में निर्मल वर्मा, शिव

प्रसाद सिंह,गोविंद मिश्र, नरेंद्र कोहली, विवेक राय मनोहर, श्याम जोशी, वीरेंद्र जैन, कमल कांत त्रिपाठी, सुरेंद्र वर्मा, रामदरश मिश्र उल्लेखनीय उपन्यास कारों में शामिल है।

आधुनिक काल में महिला साहित्यकारों का भी बड़ी मात्रा में इस विधा में अवतरण हुआ जिसने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और रंग दिया ।महिला रचनाकारों में कृष्णा सोबती, 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'जिंदगीनामा', 'दिलो दानिश' दीप्ति खंडेलवाल, मनु भंडारी, उषा प्रियंवदा, मेहरुन्निसा परवेज, ममता कालिया, मृणाल पांडे, प्रभा खेतान, मैत्री पुष्पा, राजीव सेठी, सूर्यबाला आदि ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिंदी उपन्यास अपने उद्भव से लेकर आज तक निरंतर प्रगति कर रहा है। तकनीकी और विषय वस्तु की दृष्टि से आधुनिक काल में जो असाधारण प्रगति उपन्यास साहित्य ने की है वह अत्यंत सराहनीय और उत्कृष्ट है। नए उपन्यासकारों ने वर्णनात्मक विवरणात्मक, आत्मकथात्मक, विश्लेषणात्मक शैली में उपन्यासों की रचना की है जो उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करती है।

2.1 कहानी का उद्भव एवं विकास:

हम हमारे बचपन से ही हमारे माता-पिता,दादा-दादी या नाना-नानी के माध्यम से कहानियाँ सुना करते हैं। वह कहानियाँ राजा -रानी, पशु पक्षियों, देवी देवता, चमत्कार, जादू टोना, मूर्ख, बुद्धिमान और भूत प्रेतों से जुड़ी होती थी बचपन में हम जिसे सुनते थे उस माध्यम को साहित्यिक भाषा में कहानी के रूप में जाना जाता है ।जहां कहानी सुनने का शौक बच्चों से लेकर बड़े और विद्वानों तक होता है कहानी सुनने या पढ़ने के माध्यम से हमारा मनोरंजन होता रहता है साथ में इसके माध्यम से हमें ज्ञान, शिक्षा और यथार्थ का दर्शन होता हैं।

आधुनिक हिंदी कहानी का उद्भव 18वीं सदी से लेकर 19 वीं शताब्दी के मध्य में हुआ है ऐसा कुछ विद्वानों का मानना है की कहानी का उदय प्राचीन कथा परंपरा,

पंचतंत्र कथाएं, कथा सरित सागर, हितोपदेश जातक कथाओं से जोड़ते हैं, तो कुछ विद्वान स्वामी गोकुलनाथ की 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' को हिंदी का प्रथम कहानी संग्रह मानते हैं।

हिंदी कहानी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी की मानी जाती है । "प्रेमचंद का नाम हिंदी साहित्य में सबसे शिखर पर माना जाता है । प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में 300 से अधिक कहानियाँ लिखी और अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने हिंदी कहानी के क्षेत्र में श्रेष्ठता प्राप्त की है।"[5] हिंदी कहानी के विकास में प्रेमचंद जी को केंद्र माना जाता है और उन्हें केंद्र में रखकर हिंदी कहानी और विकास को तीन स्तरों में विभाजित किया गया है ।

हिंदी कहानी हिंदी साहित्य की प्रमुख कथात्मक विधा है।पिछली एक सदी में हिंदी कहानी में आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आंचलिक आधी दौर से गुजरते हुए सुदीर्घ यात्रा में अनेक उपलब्धियां हासिल की है। प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी में जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वर नाथ रेनू, उषा प्रियंवदा, मनु भंडारी ज्ञानरंजन, उदय प्रकाश, ओम प्रकाश वाल्मीकि प्रमुख कहानीकार रहे।

2.1.1 प्रेमचन्द पूर्व युग (1915-1901) :

इस कालखंड को हिंदी कहानी का बाल्यकाल कहा जा सकता है। प्रथम चरण में कहानी रोमानियतआदर्श वह मनोरंजन से जुड़ी रही। किंतु यह शिक्षित , वर्ग को प्रभावित करने मेंनाकाम रही। इन कहानियों में किस प्रकार की प्रौंढता दिखाई नहीं दी। इस काल की प्रमुख कहानियों में रामचंद्र शुक्ल की ग्यारह वर्ष ' कुंदन लाल 'ग्राम' जयशंकर प्रसाद की 'दुलाईवाली' बंगमहिला की 'का समय किशो 'उसने कहा था' चंद्र शर्मा गुलेरी की'राखी बंद भाई' वर्मा कीरीलाल गोस्वामी की प्ले' और मास्टर भगवान दास की 'गुलबहार'ग की चुड़ैलकहानियों ' का समावेश होता है।

“आधुनिक कहानी का प्रवर्तन भारतेंदु युग में हुआ हिंदी की पहली कहानी से लेकर विवाद है कुछ लोग इंशाअल्लाह खाकी 'रानी केतकी की कहानी' को हिंदी की प्रथम कहानी मानते हैं लेकिन इसमें कहानी का कोई तत्व उपलब्ध नहीं है। इसके बाद किशोरी लाल गोस्वामी की 'इंदुमती',बंगमहिला की 'दुलाईवाली' रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई कहानियों ने विदेशी या बांग्ला साहित्य के प्रभाव में आकर हिंदी में कहानी लिखने का प्रयास किया। माधव राव सपरे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी 'को हिंदी की प्रथम कहानी माना जाता है।”[6]

2.1.2 प्रेमचंद-प्रसाद युग 1915 से 1936:

ई.सन् 1916 के आसपास प्रेमचंद और प्रसाद कहानी के क्षेत्र में आए उनके आने के पश्चात अंग्रेजी और बांग्ला कहानी कारों का प्रभाव कम होने लगा। द्विवेदी युग की 'सुदर्शन', 'इंदु','सरस्वती' हिंदी गल्प माला आदि पत्रिकाओं का हिंदी कहानी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है।इन पत्रिकाओं के माध्यम से सैकड़ों कहानियों का प्रकाशन किया गया।जिसमें विविध विषयों और शैलियों का समावेश होता है कहानी का वास्तविक विकास तो प्रेमचंद के समय से ही प्रारंभ हो गया था। प्रेमचंद के समय में ही आख्यायिक कहानियों का स्थान सच्ची कहानियों ने ले लिया था।उनके समय में ही कहानी में घटना की प्रधानता का स्थान कहानी के पात्रों, भावना ने ले ली और वास्तविक मानव जीवन और मनोविज्ञान से उनका संबंध स्थापित हुआ। प्रेमचंद से थोड़े ही पहले प्रसाद जी इस चित्र में सक्रिय थे उनकी कहानियों में काव्यात्मक नजर आती है।उनकी कहानियों में यथार्थ, आदर्श, रोमांटिक दिखाई देती है ।प्रसाद जी के कहानी संग्रह में' आकाशदीप','आंधी',' इंद्रजाल' तथा ''छाया है प्रसाद की कहानियों में अधिकतर भावना प्रधान एवं कल्पना प्रधान नजर आती है, काव्यात्मक भाषा, सांकेतिक व्यंजना उनकी कहानियों की अन्य विशेषताएं हैं।

प्रसाद की अनुरकिक्त इतिहास से भी रही है जो उनकी कहानियों के काल, घटना वह पात्रों से प्रकट होती है। उनकी कहानियाँ व्यक्तिगत भावना एवं स्थापित नैतिकता का द्वंद सामने रखती हैं। इसके अतिरिक्त सुदर्शन, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक ने भी प्रेमचंद की परंपरा की कहानियाँ लिखीं। कौशिक की 'ताई' और सुदर्शन की 'हार की जीत' प्रसिद्ध कहानियाँ है। वृंदावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी हैं।

हिंदी कहानी के विकास की दृष्टि से यह क्रांतिकारी रहा है।प्रेमचंद ने अनुभूत सत्य व आम आदमी के जीवन के यथार्थ को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी कहानियों में आदर्श से यथार्थ तक की यात्रा है ।प्रसाद के अंतर्द्वंद को अपनी कहानियों का विषय बनाया आगे चलकर प्रसाद की परंपरा का निर्वाह जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी वह प्रेमचंद की परंपरा का निर्वाह यशपाल, विष्णु साहनी, अमरकांत और ज्ञानरंजन आदि ने किया।

2.1.3 उत्तर प्रेमचंद युग (1936- 50)

प्रेमचंद एवं प्रसाद के बाद हिंदी कहानी को नया आयाम देने वाले में जैनेंद्र इलाचंद्र जोशी व अन्य प्रमुख रहे। इन्होंने मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखीं। यह कहानीकार फ्राइड से प्रभावित थे।उन्होंने व्यक्ति और उसकी मन: स्थितियों को महत्त्व दिया।जैनेंद्र की कहानियों में चरित्र वैशिष्ट्य, मानसिक द्वंद, स्त्री - पुरुष के संबंधों से संदर्भ लिए गए हैं। इनकी अधिकांश कहानियों में मुख्य विषय नारी हैं। उनकी प्रमुख कहानियां 'खेल', 'पाजेब', 'अपना अपना भाग्य','जाह्नवी', 'रत्नप्रभा' है। इलाचंद्र जोशी मानव मन के भीतर झाँककर दमित वासनाओं ना हो वह कुंठाओं का विश्लेषण करते हैं।इनकी कहानियों के पात्र किसी -ना- किसी हीन भावना के शिकार होते हैं 'आहुति', 'डायरी के नीरस पृष्ठ', 'दुष्कर्मी' आदि इसी प्रकार की कहानियां हैं।अज्ञेय व्यक्ति स्वतंत्रता पर कहानियाँ लिखी हैं।उन पर स्त्री अस्तित्ववादी चिंतन का प्रभाव दिखाई देता है। उनकी प्रमुख कहानियाँ 'विपथगा','रोज', 'शरणार्थी', जायदोल हैं। यशपाल की विचारधारा में मार्क्सवादी

दृष्टिकोण दिखाई देता है । उनकी कहानियाँ मार्क्सवादी दृष्टिकोण से प्रभावित हैं । समस्या चाहे नारी शोषण की हो या, पुरुष वर्ग के स्त्री पर शासन की वर्ग वैषम्य की धर्म संबंधी आडम्बरों की अथवा समाज में फैले भ्रष्टाचार की समाजवादी चिंतन की प्रमुख रहा है।इस समाजवादी परंपरा पर आगे चलकर राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, विष्णु प्रभाकर, नागार्जुन ने सशक्त कहानियाँ लिखी हैं। इस दौर की कहानियाँ किसी -न -किसी विचारधारा में लिखी गई हैं। लेकिन इसने हिंदी कहानी को एक नई दिशा और दशा प्रदान की है।

2.1.4 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी(195055-)

स्वतंत्रता के बाद हिंदी के कहानी साहित्य में बड़ा परिवर्तन देखने को मिलता है स्वतंत्रता के बाद लोगों की विचारधारा में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं बौद्धिक सांस्कृतिक परिस्थितियों में काफी व्यापक प्रभाव पड़ा जिसको हम कहानी साहित्य में भी देख सकते हैं। "स्वतंत्रता और हिंदी कहानी विस्तृत सन 1950 से 55 आरंभ होने वाली प्रमुख विद्या मानी जाती है जो एक नए आयाम को स्पर्श करती है।समाज में बदलाव के साथ साथ नहीं विद्रोह के प्रभाव से लाती है 1960 तक नई कहानी कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से अपने पुराने ढंग को एक परंपरागत स्वरूप प्रदान करती है। कथा साहित्य को नई कहानी नाम देने का श्रेय डॉ नामवर जी को जाता है कहानी की चर्चा करते समय अचानक ही नई कहानी शब्द का उद्भव हुआ और नई कहानी शब्द का प्रयोग आलोचकों और कहानीकार ने भी किया।

इस गद्य विधि के प्रमुख कहानीकार के रूप में राजेंद्र यादव मोहन राकेश, मार्कण्डेय, विष्णु प्रभाकर, कृष्णा सोबती, डॉ रांगेय राघव, भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, अमरकांत, मन्नू भंडारी अमृता प्रीतम मेहरून्निसा, परवेज, कृष्णचंदर,भैरव प्रसाद गुप्त, विजय चौहान को स्वीकार किया गया है।

नई कहानी कि विद्या ने समाज में व्याप्त अंधेरे अज्ञान को जान लिया था इसलिए जीवन से जुड़े हुए वास्तविक यथार्थ को जानते हुए विभिन्न पात्रों का

प्रादुर्भाव हुआ। इस दौर में आज यथार्थ के धरातल पर आधारित कहानियों की अधिक मात्रा में रचना की गई इस दौरान जो कहानियाँ लिखी गईं वे इस प्रकार है'धरती अभी घूम रही है','पराया सुख, 'गदल', 'चीफ की दावत',' गुल की बन्नो', 'शुतुरमुर्ग', 'बदबू हंसा जाए','जहां लक्ष्मी कैद है', 'अकेला', 'भैंस का कटक्या', 'तीसरी कसम',' लंदन की एक रात'',यही सच है', 'जीवन आसमान रक्तपात', 'जानवर और जानवर', 'सिक्का बदल गया', 'फिर इधर-उधर ','कस्तूरी मुर्ग','एक पति के नोट्स ','गुलाब के फूल और काँटे' इन कहानियों का अभ्यास करने से पता चलता है कि जीवन यथार्थ के धरातल पर टिका हुआ है, इसका कल्पना से कोई संबंध नहीं । कहानी किसी व्यक्ति विशेष की संपदा नहीं अपितु यह एक यथार्थ जीवन की कमान संभालती है उसे सही मार्गदर्शन करती हैं । हम वास्तविक रुप से जीवन निर्वाह करते हैं उसी वास्तविक जीवन का आईना है नहीं कहानी इस युग की तमाम सुविधाओं की विभक्ति हमें नई कहानी में दृष्टिगत होती है नई कहानी हमें समाज के यथार्थ और वास्तविक जीवन का वह देती है जो पाठक की चेतना पर सीधा असर करती है।

कहानी को हम विभिन्न भागों में बाँट सकते हैं-

(1) साठोत्तरी कहानी

(2) अकहानी

(3) आंचलिक कहानी

(4) सचेतन कहानी

2.1.5 साठोत्तरी कहानी:

ई. सन 1950 के आरंभ से ही नहीं कहानी में आंदोलनों की शुरुआत हुई ऐसा लगता था नई कहानियाँ मध्यम वर्ग की समस्याओं को लेकर ही पूरी तरह फँस चुकी हैं। नई कहानी उस काल के समाज तक ही सीमित रह गई थी ऐसा लगता था।नई कहानी की कथा का स्वतंत्र भारत के प्रति बेहद ही नहीं दृष्टि से देख रहे हैं थे परंतु उनके आशाएँ सारी टूट चुकी थी। ई.सन 1960 के बाद की

नई पीढ़ी में अनैतिकता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी, चाचा-भतीजावाद ही नजर आ रहा था। अतः समाज में नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा था संवेदनाएँ मर चुकी थी ।प्रजा की भावना शून्य हों चुकी थी। सठोतरी हिंदी कहानीकारों में सूर्यसिंहा,ज्ञानरंजन, रवींद्र कालिया, दूधनाथ सिंह, सुधा अरोड़ा, रामदरश मिश्र, रमेश बक्षी, शेखर जोशी, अनीता अग्रवाल, वेद राही, ओमप्रकाश निर्मल, महीपसिंह, काशीनाथ सिंह आदि उल्लेखनीय कहानीकारों के नाम प्रचलित हैं।

समाज में हो रहे नैतिक मूल्यों के पतन के विषय में अनेकों अनेक कहानियों की रचना की गई जिसके अंतर्गत 'पत्थरों के बीच', 'लोग बिस्तर पर', 'बड़े शहर का आदमी', 'दरार',' मुट्ठी भर पहचान','बेल के निशान', 'खाली घर ,' चार' मोती', 'बेआब पेपरवेट' आदि उल्लेखनीय और समाज पर चोट करने वाली कहानियां है।

2.1.6 अकहानी

ई.स. सन 1960 के दशक में कुछ कथाकारों कहानी में कथावस्तु के लोप हो जाने के कारण और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करते हुए कहानी को अकहानी कहना आरंभ कर दिया। इन कहानीकारों का यह कहना था कि "एक अच्छी कहानी में निर्गुण कथावस्तु की अनिवार्यता आवश्यक नहीं है"।श्री नामवर सिंह को उनके द्वारा रचित कहानी के आधार पर इस कहानी' एक और शुरुआत' आंदोलन का प्रवर्तक माना जाता हैकथावस्तु जिसमें लोप हो ऐसी कहानी को अकहानी कहा जाता था। ऐसी कहानियों के कथाकारों में शिव प्रसाद सिंह,मार्कंडेय, विवेक राय रामदरश मिश्र, शेखर जोशी, शैलेश मटियानी आदि प्रमुख कहानीकार माने जाते हैं।

“अकहानी जीवन की एब्सर्ड एवं पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों की घटनात्मक प्रवृत्तियों की छाया है ।जो संबंध बनता स्थितियों को उभारती है पति-पत्नी संबंध में आत्मीयता की जगह तनाव और नफरत है महानगरी जीवन की यात्रा को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया गया है और कहानी में सेक्स एवं

समलैंगिकता पर भी लिखा गया है। ‘कटघरे', 'मणिमधुकर' ,'माणिका मोहिनी' की 'एक मेरा दोस्त'का कथ्य इसी प्रकार का है।” [7]

2.1.7 आंचलिक कहानी

जिस कहानी का परिवेश ग्रामीण अंचल पर आधारित हो और जो पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित करती हो जिसमें एक धरातल संस्कृति, जीवनशैली को प्रस्तुत किया गया हो आंचलिक कहानीकार या साहित्य की जब हम बात करते हैं तो एक नाम हमारे जहन में सहज ही उभर आता है वह है फणीश्वर नाथ रेणू जिनको अंचल परिवेश को उभारने वाले प्रवर्तक माना तो सही होगा दूसरा नाम है नागार्जुन का, इसके उपरांत अन्य कहानीकारों में शिव प्रसाद सिंह, शेखर जोशी आदि प्रमुख और उल्लेखनीय कथाकार हैं।

2.1.8 सचेतन कहानी

“1960 के आंदोलनों में कहानी की प्रतिक्रिया में 'सचेतन कहानी'प्रारंभ हुआ जिसका श्रेय महीप सिंह को है इनका मानना है कि कहानी को एकता से मुक्त करके वैयक्तिकता धरातल पर प्रतिष्ठित करना आवश्यक है उनका कहना है "सचेतन एक दृष्टि है,वह दृष्टि जिसमें जीवन जिया जाता है।" सचेतन कहानी जिंदगी की स्वीकृति की कहानी है वह अकेलेपन और बनावट घुटन का प्रदर्शन नहीं करती सचेतन कहानी मृत्यु संत्रास की प्रवृत्ति को पश्चिम से आयातित थोपीप गई मानती है एवं आत्मसंघर्ष, सजगता वह जागरूकता का समर्थन करती है। इससे अकहानी के एब्सर्ड दर्शन का विरोध किया।” [8]

“सचेतन कहानीकार सामाजिक परिवेश से संबंध रहे हैं। वे परिवेश में व्याप्त विघटन, मूल्यहीनता को अजूबा नहीं मानते। परिवर्तित परिवेश को स्वीकारना और जीना ही सचमुच सक्रिय होकर जीना है। महीप सिंह जी की कहानी 'कील' मनोहर चौहान की'बीस सुबह के बाद' आदि कहानियों के कथ्य, मानसिक द्वंद्व से मुक्ति पाने के संदर्भ पर आधारित है।”[9]

इन कहानियों की एक अन्य विशेषता सहज है। इस संस्था की प्राप्ति घटनाओं के संकलन से नहीं होती वरन बदलते हुए युग और परिवेश के दबाव में बनते-बिगड़ते मानव संबंधों व मूल्यों की सही पहचान से होती है।कहानी के इस आंदोलन में शिल्प के आधार पर कोई नवीनता है तो यही की सपाट व सरल है।इस आधार पर सचेतन कहानी कोई पहचान नहीं बना सकी है। यह कोई शिल्पगत आंदोलन नहीं, वैचारिक आंदोलन है।प्रमुख कहानीकार महीप सिंह, मनोहर चौहान, श्याम परमार,जगदीश चतुर्वेदी, ममता कालिया,हिमांशु जोशी है।

"सचेतन कहानी नई कहानी का विरोध नहीं करती बल्कि यह उसका विकास है।इसने नई कहानी को वैचारिक आधार दिया एवं कहा और विस्तार ही- कहानी की निष्क्रियता व निरर्थकता बोध के विरुद्ध सचेतन व सक्रिय जीवनबोध एवं जीवन संघर्ष का स्वर दिया है।"[10]

2.1.9 समांतर कहानी

ई .सन 1971 के समय इस कहानी के आंदोलन प्रवर्तक के रूप में कमलेश्वर को माना जाता है पत्रिका 'सारिका' में इस आंदोलन को प्रोत्साहित किया। समांतर लिखी गई कहानियों में निम्न वर्ग की सामाजिक परिस्थिति का वर्णन दृष्टिगत होता है।इस समय के कहानीकारों में श्रवण कुमार, मृदुला गर्ग, गनी मधुकर, नरेंद्र कोहली, निरुपमा सोबती, हिमांशु जोशी, आदि प्रमुख कथाकार है।1980 तक आते-आते हिंदी साहित्य में दलित वर्ग को ध्यान में रखकर कहानियों का निर्माण होने लगा वर्ण व्यवस्था को पूरी तरह नकार दिया गया, जब दलितों को शिक्षा प्राप्त होने लगी तो दलित वर्ग अपनी अनुभूतियों को साहित्य सर्जन करके उजागर किया 1990 में सर्वश्री ओमप्रकाश, वाल्मीकि, मोहनदास, नैमिषराय, सूरजपाल चौहान, अधिकारों की कहानियों ने एक विशेष आंदोलन का रूप दिया और संसार को वास्तविकता का बोध दिलाया।

"समांतर कहानी का मुख्य दायित्व यही है कि वह आम आदमी को बतलाए की लड़ाई कैसे और किससे लड़नी है।इस दृष्टि से जब जवाहर सिंह की'आशिकी

गुस्से में' आदमी हिमांशु जोशी की 'जलते हुए डेने' आशीष सिन्हा की 'आदमी' अरुण मिश्र की 'अंधे कुएं का रास्ता' प्रमुख है ।"[11] "आजादी के बाद आदमी की स्थिति में विशेष अंतर नहीं आया बेरोजगारी, महंगाई, आर्थिक तंगी में बदलाव नहीं आया। जीने की शर्तें होती गई समांतर कहानीकार ने सामान्य जन की इस नियति को शिद्दत से महसूस किया उसने कहानी को आम आदमी के संघर्ष का मोर्चा बनाया यह संघर्ष सही मानसिकता के निर्माण के लिए था।"[12] समांतर कहानी ने समय के सत्य को ही कहानी का कथ्य बनाया समय के सत्य से तात्पर्य उन आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक दबाव से है जो हर समय मानव जीवन को तोड़ते रहते हैं और जिसके खिलाफ संघर्ष जीवन की अनिवार्य शर्त है।इनकी आस्था भी यही है कि अंत में विजय आम आदमी की उच्च वर्ग उसकी परिधि से बाहर नहीं है, मगर कहानीकार की एक निश्चित पूर्वाग्रह से ग्रसित दृष्टी हैं। इसने साधारण जन के संदर्भ में ही अन्य वर्गों की प्रकृति की पहचान की है। "समांतर कहानी किसी सिद्धांत को गढ़कर कहानी लिखने का प्रयास नहीं है। यह समय सापेक्ष कहानियां है समय की भयानक और व्यवस्था की क्रूरता के विरुद्ध संघर्ष करती कहानियां है। उसका चिंतन वामपंथी के रूप में प्रगतिशील कहानी योग की अगली कड़ी के रूप में माना जा सकता है।"[13]

2.2 व्यंग्य का उद्भव और विकास

2.2.1 व्यंग्य:

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जिसमें मजाक उपहास एक प्रकार की आलोचना का प्रभाव रहता है तिरंगे को मुहावरे में व्यंग्य बाण कहा गया है । हिंदी में हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल इस विधा के प्रमुख है। व्यंग्य का जन्म अपने समय की विद्रूपताओ के भीतर से उपजे असंतोष से होता है ।विद्वानों में इस बात पर मतभेद लगातार बना रहा है कि व्यंग्य को एक अलग विधा माना जाए या कि वह किसी भी विधा के भीतर 'स्प्रिट' के रूप में मौजूद रहता है, दरअसल व्यंग्य एक ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से व्यंग्यकार समाज की

जीवन की विसंगतियों, पाखंड ढकोसला, बन को दुनिया के सामने उजागर करता है। व्यंग्यकार अपने पात्रों और रचनाओं में ऐसी स्थितियों की योजना करता है जो इन अवांछित स्थितियों की योजना करता है जो पाठक के मन मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। और उन्हें सचेत करते हैं व्यंग्य में विसंगतियों का चित्रण सीधा सीधा ना होकर उसमें व्यंजना के माध्यम बात को जाता हैं।इसलिए व्यंग्य प्रभाव कारी होने के साथ-साथ उसमें मारक क्षमता भी अधिक होती है।

2.2.2 आरंभिक युग में व्यंग्य:

हिंदी में संत -साहित्य से व्यंग्य का आरंभ माना जा सकता है ।कबीर व्यंग्य के आदि पर प्रणेता है उन्होंने मध्यकाल की सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रहार किया है।हिंदू मुसलमानों के धर्म आडंबर,गरीबी अमीरी, जातिभेद पर कबीर द्वारा किए गए व्यंग बड़े मारक हैं।

"कांकर पाथर जोरि के मस्जिद लई चुनाय।

ता चढ़ी मुल्लांगी दे क्या बहरा हुआ खुदाय।।

रीतिकाल में व्यंग्य रचनाओं की अनुपस्थित प्रतीत होती है। कबीर के बाद भारतेंदु ने व्यंग्य को हथियार बनाया उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ बंद करते हुए लिखा है**"वह मनुष्य क्यों भाई, हम गुलाम अभिभूत।"** इस पंक्ति के माध्यम से भारतेंदु जी ने अंग्रेजो के खिलाफ व्यंग्य किया है। भारतेंदु युग के अन्य महत्त्वपूर्ण व्यंग्यकार में बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन और प्रताप नारायण मिश्रहैं परंतु व्यंग्य उनकी रचनाओं में केंद्रीय भूमिका नहीं प्रदान करते दिखाई देते। बालमुकुंद गुप्त की रचनाओं में दिखाई देता है। शिव शंभू के' चिट्ठे' नामक उनकी प्रसिद्ध व्यंग रचना है, जिसमें उन्होंने सामाजिक परिस्थितियों पर तीखा प्रहार किया है तत्कालीन शासन व्यवस्था और राजनीति इनके व्यंग रचनाओं की आधार स्तंभ का काम करती है।

2.2.3 भक्ति काल:

भक्ति काल के प्रारंभ में अनेक कवियों ने अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए व्यंग्य को अपना माध्यम बनाया है।

उदा: **"पत्थर पूजै हरि मिले तो मैं पूजूं पहार**
घर की चाकरी कोई न पूजे पीस खाए संसार"[14]

मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला घरे बेटी ब्याहे, घर ही में करे सगाई।। [15]

हिंदुअन की हिंदूआई देखी, तुरकान की तुरकाई।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, कौन राह है जाई।। [16]

"अरे इन दोनों राह ना पाई
हिंदू करें अपनी बढ़ाई, गागर छुवन ना देई
वैश्या के पायनतर सोवे, ये देखो हिंदूआई।।[17]

यहां पर कबीर ने प्रथम उद्धरण में दिखावे की भक्ति पर व्यंग्य कसा है क्योंकि घर की चक्की पर लोग आटा पीस कर खाते हैं पर उसको कोई नहीं पूछता परंतु पत्थर में कुछ भी ना होते हुए भी पत्थर की लोग पूजा करते हैं। मुसलमान लोग मुर्गी मुर्गा खाते हैं और अपने ही घर की बेटी को खला के घर ब्याह देते हैं अर्थात अपने ही बहन के घर पर बेटी की सगाई कर देते हैं यहां पर मुसलमानों में चली आ रही प्रथाओं पर व्यंग्य कसा है। हिंदुओं की और तुर्कों की दोनों समाजों की भक्ति देखी है मगर कबीर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि मुझे इन दोनों में से किस राह पर जाना चाहिए इसका कोई पता नहीं चलता। इन दोनों की राह पर नहीं जा सकते क्योंकि हिंदू अपनी बढ़ाई ही करते हैं अपने घर की गागर

का पानी निम्न जाति को छूने नहीं देते मगर अपनी शानौ-शौकत में जाकर वेश्या के पांव के नीचे तक सो जाते हैं।

2.2.4 रीतिकाल

ई. स 1700 से ई .स 1900 के समय काल को रीतिकाल कहते हैं । इस काल में श्रृंगार रस की ही महिमा अधिक थी । राजा- महाराजा इस काल में सुरा-सुराही, भोग-विलासिता में ही अपना अधिकतर समय पसार करते थे। उस समय के कवि केवल राज दरबारों में अपने राजा की प्रशंसा और उनके गुणगान में ही व्यस्त रहते थे इसी कारण हमें इस काल में व्यंग्य रचनाओं की अनुपस्थिति प्रतीत होती है। केवल बिहारी द्वारा रचित बिहारी सतसई में अनेक दोहे में व्यंग दृष्टिगत होता है और थोड़ा बहुत घनानंद की रचना में देखने को मिलता है।

उदा:"**नहीं पराग नहीं मधुर मधु नहिं विकास ईहि काल**
अली कली सौ बंधो रहयो,आगे कौन हवाल।"[18]
जप,माला, छापा, तिलक सराय न एको काम,
मन नाचे काचे वृथा सॉचे राचे राम।"[19]

कबहु वा बिसाती सुजान के आंगन,
मौ असुवानि कू लै बरसे।।"[20]

यहां पर भक्ति के विषय पर व्यंग किया है जिसमें जप,माला, छापा तिलक, यात्रा आदि का व्यंग के माध्यम से विरोध किया है ।भक्ति के संबंध में व्यंग्य करते हुए कहा गया है कि छोटी सी लड़की जिसका विकास भी पूर्ण तरीके से नहीं हुआ अर्थात छोटे फूलों की तरह होती है मगर राजा लोग शराब और अपने शौक पर अधिक महत्त्व देते हैं अपने सारे काम छोड़कर बस उसी में डूबे रहते हैं। यहां पर धनानंद एवम बिहारी ने कहीं, कहीं पर व्यंग्य का सहारा लिया है।

2.2.5 स्वतंत्रता पूर्व युग

प्रेमचंद द्वारा रचित कहानियों, उपन्यासों में युगीन समस्याओं पर व्यंग्य किया गया है। प्रेमचंद ने किसानों की समस्या आम आदमी की रोजमर्रा की समस्याओं पर व्यंग्य किया है। प्रेमचंद के बाद के रचनाकारों में निराला जी के साहित्य में व्यंग्य पाया जाता है 'कुकुरमुत्ता' रचना में व्यंग्य की अभिव्यक्ति विद्रूपता फैलाने वाले समाज के खिलाफ चुनौती के रूप में हुई है। इनके अलावा पंडित बेचन शर्मा,'उग्र' और रांगेय राघव का नाम प्रचलित लेखकों में लिया जाता है।

2.2.6 स्वतंत्र्योत्तर युग:

भारत की आजादी के बाद आम आदमी खुशहाली के सपने देखने लगा था परंतु देश में विपरीत परिस्थितियों और राजनीतिक दूरदर्शिता के कारण आम आदमी के सपने पूरे नहीं हो सके।स्वतंत्रता के बाद देश में विविध विसंगतिया बढ़ने लगी जिससे सामाजिक नैतिक मूल्यों का पतन होता चला गया। आम आदमी के सुखी जीवन जीने के सपने को ग्रहण लग गया। सत्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा का स्थान अनेक विसंगतियों ने ले लिया स्वतंत्रता पूर्व देखे गए सपने आजादी के बाद के छठे दशक तक आते-आते खंडित हो गए व्यक्ति और समाज की आंतरिक जटिलताओं के साथ-साथ अन्तर्विरोध भी बढ़ने लगा। व्यक्ति और समाज निजी स्वार्थ को अधिक महत्त्व देने लगे थे निरंतर बढ़ती विसंगतियों के कारण व्यंग्य लेखन की एक लंबी परंपरा का उदय हुआ। इस परंपरा के प्रतिनिधि हरिशंकर परसाई रचनाकार हैं।

परसाई की रचनाओं में भारत की यथार्थ स्थितियों को अपने व्यंग्य के माध्यम से प्रकट किया है उसमें सकारात्मक -नकारात्मक सभी पहलुओं पर अपनी दृष्टि डाली है। परसाई की रचनाओं में शोषित भारत के दर्शन होते हैं जिसमें अपनी कटाक्ष वाली भाषा का प्रयोग किया है जो सीधी हमारे हृदय पर वार के समान प्रतीत होती हैं। परसाई की रचनाओं का संसार बहुत विस्तृत है

जिसमें उनकी निजी अनुभूतियों और निरवैयक्तिक अभिव्यक्ति उनके व्यंग्य लेखन की विशेषता है। परसाई जी की अभिव्यक्ति भारत के निम्न वर्ग से शुरू होकर बहुराष्ट्रीय समस्याओं तक को अपने भीतर समाती है परसाई जी अपने व्यंग्य के माध्यम से सृजन और संहार दोनों करते हैं।शोषक वर्ग के प्रति परसाई जी का आक्रोश हमें स्पष्ट रूप से उनकी रचनाओं में दृष्टिगत होता है।

शरद जोशी भी परसाई की तरह ही अपनी अलग भाषा ही तेवर के साथ दंगाई करते हैं । इनके रंग में भाषा में वक्रता, शब्दों और विशेषण का एक अलग संयोजन देखने को मिलता है। श्रीलाल शुक्ल जी का नाम बड़े आदर के साथ व्यंग्यात्मक लेखक के रूप में लिया जाता है । 'राग दरबारी' उनके श्रेष्ठ व्यंग्यात्मक उपन्यास का उदाहरण है जिसमें उन्होंने व्यथा को सजीव रूप से प्रस्तुत किया है। हास्य और व्यंग्य का संयोजन करके लेखन करने वाले रविंद्रनाथ त्यागी भी इस श्रेणी में आते हैं। रविंद्र नाथ त्यागी के व्यंग्य पाठकों को हास्य और सोचने के लिए बाध्य करते हैं।

लतीफ घोंघी के व्यंग्य में राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को विषय बनाया है। इनके व्यंग्य में भुखमरी, नारी शोषण, कालाबाजारी, शैक्षिक- साहित्य दुनिया की गड़बड़ियाँ आदि विषयों के साथ-साथ आम आदमी की रोजमर्रा की परेशानियों को अपने व्यंग्य में स्थान दिया है और इनकी भाषा में उर्दू का पुट दिखता है।

2.2.7 आधुनिक काल:

आधुनिक काल का समय ई.स. 1900 के बाद का समय माना जाता है। व्यंग्य का उद्भव और विकास हम भक्तिकाल से अस्तित्व में आया ऐसा कह सकते हैं परंतु आधुनिक काल तक आते-आते व्यंग्य की जो धारा प्रवाह धीमी गति से आगे बढ़ रही थी उसे इस काल में नई दिशा और तीव्र गति प्राप्त हुई और आज यह हमें एक विस्तृत रूप में पूर्ण विकसित स्वरूप में विस्तृत हो रहा है।आज हम कहानी

उपन्यास नाटक उठाकर पढ़े तो उसमें व्यंग्य की विधा अपना एक अलग अस्तित्व रखती है।

भारतेंदु को हम इस काल का व्यंग्य का सूत्रधार कह सकते हैं क्योंकि भारतेंदु ने अपने नाटक, कहानी, निबंध और काव्य की विधाओं में व्यंग्य का प्रयोग किया है उनका कटाक्ष,हास्य, गुस्सा,क्षोभ हम उनके द्वारा रचित रचनाओं में देख सकते हैं उनका शोषणकारी नीति के प्रति जो अपना विरोध दर्ज है वह इस प्रकार है।

भीतर भीतर सब रस चूसे, हंसी -हंसी के तन मन धन भूसै।

जाहिर मातम में आती तेज, क्यों सखि सज्जन नहीं अंग्रेज।।[21]

उनके द्वारा रचित अंधेरी नगरी में प्रशासन की सोई हुई व्यवस्था को जगाने के लिए और नई चेतना का संचार करने के लिए व्यंग्य किया है

"चूरन जब से हिंदी में आया। इसका धनबल सभी घटाया।

चूरन सभी महाजन खाते, जिसमें जमा हजम कर जाते।

चूरन पुलिस वाले खाते ।सब कानून हजम कर जाते।[22]

इसके अलावा हमें प्रेमचंद की कहानियों उपन्यासों में व्यंग्य नजर आता है 'पूस एक रात','कफन','शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियों में शोषण अत्याचार और पूंजीवादी प्रथा के खिलाफ व्यंग्य के माध्यम से आक्रोश व्यक्त किया है । इसके उपरांत अपने उपन्यास 'निर्मला' और 'गोदान' में नारी शोषण पर और सामाजिक रीति-रिवाजों पर तंज कसा है द्विवेदी युग के प्रताप नारायण मिश्र द्वारा रचित 'दांत' निबंध एक हास्य और व्यंग्यात्मक निबंध विषय में आता है । भगवान दास द्वारा रचित 'उर्दू बेगम' उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करते हैं बाबू गुलाब राय भी अपने निबंधों के माध्यम से व्यंग्य और हास्य निर्मित करते हैं।इसके अलावा हम उपेंद्र नाथ अश्क, कांतानाथ, राजेंद्र यादव, जी पी श्रीवास्तव भी व्यंग्य को महत्त्व देते हैं भगवती चरण वर्मा ने अपने व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक अंधविश्वास, पाखंड,रीति-रिवाजों, कुप्रथा पर अपनी लेखनी चलाई है,

पांडे बेचेन 'कढ़ी का कोयला', 'चॉकलेट', 'दिल्ली का दलाल','बुधवा की बेटी' अपने गद्य साहित्य में स्थान प्रदान किया है, उनका नाम आते ही हम आधुनिक काल में हरिशंकर परसाई का नाम बड़े ही आदर के साथ लेते हैं उन्होंने व्यंग्य को एक हथियार की तरह उपयोग लेते हुए समाज पर करारा प्रहार किया है। उनकी रचनाओं में 'रानी नागमती कहानी','भोलाराम का जीव', उपन्यास 'सदाचार का ताबीज', 'सुदामा के चावल', 'राग दरबारी' उपन्यास में शरद जोशी की रचनाएँ मैं, मैं ओ मैं, तथा 'बुद्धू के दांत', 'यमदूत', 'नर्स' साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

2.3 बाल साहित्य का उद्भव और विकास

बच्चों को केंद्र स्थान पर रखकर लिखा गया साहित्य बाल साहित्य है। अर्थात हिंदी साहित्य में बाल साहित्य एक नवीन विधा है, वैसे देखा जाए तो बाल साहित्य लेखन का प्रारंभ अत्यंत प्राचीन है जो हमें नारायण पंडित की पंचतंत्र की कहानियों में मिलता है जिसमें उन्होंने पशु- पक्षियों को माध्यम बनाकर बच्चों का मनोरंजन किया है।बचपन से ही बच्चे अपने माता-पिता दादा-दादी या अन्य किसी माध्यम से कहानी सुनने का शौक रखते हैं और इस शौक के माध्यम से ही वह सीख भी लेते हैं।बाल साहित्य की कहानियों हमें सत्य, यथार्थ जैसी बातों की शिक्षा मिलती हैं जो कभी साहस, बलिदान, त्याग और परिश्रम जैसे गुणों का बीज भी बोते है। बाल साहित्य का एकमात्र उद्देश्य बच्चों का मनोरंजन करना ही नहीं अपितु आज के जीवन उपयोगी सच्चाइयों से परिचित कराना भी है।आज के बालक कल एक जिम्मेदार नागरिक होता हैं, इसलिए बाल साहित्य के माध्यम से उनके चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

बाल साहित्य का निर्माण करने वाले बाल साहित्यकार को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि बाल मन को समझे बिना बच्चों के लिए कहानियां, कविता बाल उपन्यास लिखना थोड़ा असंभव सा है. बच्चों के मन के भाव कोमल होते हैं जिससे कहानी कविता या उपन्यास के माध्यम से हम बालमन को शक्ति

प्रदान कर सकते हैं जो उनके भीतर जाकर उनमें सद्भावना, संस्कार, समर्पण, प्रेम आदि उत्पन्न कर सकते हैं।

श्री के शंकर पिलाई द्वारा बाल साहित्य के संदर्भ में 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' की स्थापना 1997 में हुई। इस ट्रस्ट के द्वारा डॉ.राय मेमोरी चिल्ड्रन वाचनालय स्थापना की गई। इस पुस्तकालय में हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा की 30,000 से अधिक पुस्तकें हैं। इसी क्रम में 1991 में शंकर आर्ट अकादमी की स्थापना की गई है जहां चित्र, पुस्तक, चार्ट ग्राफिक कार्यक्रम चलाए जाते हैं। शंकर इंटरनेशनल प्रतियोगिता का आयोजन पूरे देश में किया जाता है पत्र-पत्रिकाओं के स्तर पर 'चंपक' सबसे प्रसिद्ध है।हिंदी बाल साहित्य में 'बालहंस','बाल भारती','नन्हे सम्राट नंदन' तथा युवाओं के लिए 'मुक्ता' प्रकाशित होती है।अनेकों समाचार पत्रों में जैसे नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, पंजाब केसरी, संदेश, दिव्य भास्कर, गुजरात समाचार में बच्चों के लिए साप्ताहिक पूर्ति प्रकाशित की जाती है।

आधुनिक बाल साहित्य के प्रणेता के रूप में डॉ हरिकृष्ण देवसरे ने 300 से अधिक पुस्तकें लिखी है।जिसके लिए उन्हें साहित्य की प्रतिष्ठित संस्थाओं के माध्यम से 25 से अधिक राष्ट्रीय एवं राजकीय के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया है। श्री जयप्रकाश भारती को हिंदी भाषा साहित्य का युग प्रवर्तक माना जाता है। जो हिंदी के प्रख्यात लेखक और 'नंदन' के पूर्व संपादक थे। भारती जी ने बाल साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है 'नंदन'' उनकी सर्वश्रेष्ठ बाल पत्रिका में से एक है।

बाल साहित्य ने अपना नया आयाम यूं ही नहीं प्राप्त किया इसमें कई साहित्यकारों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। जिसमें मुख्यतः डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, शंकर सुल्तानपुरी, जयप्रकाश भारती, अनंत पाई, डॉ राष्ठ बंधु गिजूभाई बधेका, आनंद कुशवाह, निरंकार देव सेवक जैसे नाम हमारे जहन में

आते हैं। इन सभी साहित्यकारों ने ऐसे समय में बाल साहित्य का दीपक जलाया जब इस साहित्य पर कोई प्रकाश नहीं डालता था और वह अंधेरे के गर्त में कहीं डूबा हुआ था।

2.3.1 वीरगाथा काल

वीरगाथा काल में प्राप्त बाल साहित्य में एकदम साधारण जानकारी ही देखने को मिलती है इस समय बच्चों को मुकरियो, गणित, पहेलियाँ, प्रश्नों के माध्यम से ज्ञान दिया जाता था। इस माध्यम से बच्चों को मनोरंजन और शिक्षा दोनों ही प्राप्त हो जाती थीं हिंदी के प्रथम बाल साहित्यकार के रूप में आमिर खुसरो (1253 से 1329) ईस्वी को माना जा सकता है, क्योंकि अमीर खुसरो के द्वारा रचित पहेलियां,तुकबंदी, मुकरियों की रचना की गई है। जगनिक द्वारा रचित 'आल्हा गीत' बच्चों में उस समय लोकप्रिय माने जाते हैं अमीर खुसरो की पहेलियां पर दृष्टी करते हैं।

एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औधा धरा,
चारों और वह थाली फिरे,
मोती उससे एक गिरे।।[23] (आकाश)

बीसो का सिर काट लिया।
ना मारा ना ख़ून किया।।[24] (नाखून)

इस विधा को पंडित विगहपुर, वासु खमीनिया, घासीराम आदिकाल में बाल साहित्यकार के नाम अधिकतर लिप्त पाए जाते हैं, क्योंकि शायद उस समय इसको साहित्यिक स्वरूप देने का विचार भी नहीं किया जा सकता था सिर्फ मौखिक रूप से ही बच्चों का मनोरंजन किया जाता था और यह मौखिक रूप से ही प्रसिद्धि प्राप्त होते थे यह बड़े ही दुःख की बात है कि इन मौखिक रचनाकारों

का प्रणेता कौन है यह जानकारी प्राप्त नहीं है इतने लोकप्रिय होने के बावजूद भी बाल साहित्य सदैव लुप्त बाल साहित्यकारों का ऋणी रहेगा।

2.3.2 भक्ति काल:

आदिकाल की अपेक्षा इस काल में बाल साहित्य का बहुत ही उत्कृष्ट विकास माना जाता है परंतु केवल बच्चों को केंद्र स्थान में रखकर साहित्य की रचना करने वाला कोई साहित्यकार इस काल में नहीं जन्मा यहां केवल बड़ों के साहित्य का निर्माण करते समय उनकी बाल अवस्था का वर्णन देखा जा सकता है परंतु जो भी बाल साहित्य इस काल में रचा गया वह अद्वितीय है और अभूतपूर्व है।

इस काल में सूरदास तुलसीदास कबीर ने बच्चों के मानस पटल पर असर करें ऐसे साहित्य की रचना की जिसमें साहित्य के माध्यम से ही मूल्यों के बीज रोपण किया गया। जैसे कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से ही बच्चों को ज्ञान देने के लिए अपने आसपास फैली कुरीति रिवाज, जातिभेद बाह्यडंबर को मिटाने का प्रयास किया ताकि उस समय के बच्चे उस काल की परिस्थिति से अवगत हो सके। सूरदास ने अपने साहित्य में बालक कृष्ण की नटखट लीलाओं का मनमोहक वर्णन किया है जैसे बाल कृष्णा अपने नन्हे नन्हे हाथों से मक्खन खाते हैं, जमुना किनारे खेल करते हैं, गायों को चराने जाते हैं, माखन की चोरी करते हैं,अपने घुटनों पर धीरे धीरे चलते हैं। सूरदास ने अपनी पदावली में बाल की बाल लीला व सुंदर और चेतनात्मक वर्णन किया है और यह आज भी हमारे मानस पटल पर अमिट छाप छोड़ता है।सूरदास का बाल वर्णन मनोवैज्ञानिक रूप से बच्चों और बड़ों को आनंद और वात्सल्य से प्रफुल्लित कर देने वाला है। तुलसीदास ने अपना 'रामचरितमानस' में श्री राम का बाल वर्णन अत्यंत मनमोहक तरीके से किया है इसका उदाहरण संपूर्ण किष्किंधा कांड में दृष्टिगत होता है। हनुमान संबंधित 'श्री हनुमान चालीसा', 'हनुमान अष्टक' में बाल साहित्य के बाल

तत्व समाहित होने के बावजूद भी उन्हें बाल साहित्य नहीं माना जाता सत्यवादी हरिश्चंद्र, 'रामलीला' भक्ति काल की अमूल्य भेंट है।

सूरदास का बाल वर्णन:

" मैया कब ही बढ़ेगी चोटी?

कितनी बार मोहि दूध पियत भई,यह अजहूँ है छोटी।। [25]

तुलसीदास का बाल वर्णन:

तन की दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजू लताई हरे।
अति सुंदर सोहत धूरि भरे छवि भूरी आनंग की दूरि धरे ।।

दमाकै दतिया दुति दामिनी ज्यों किलकै कल बाल विनोद करें।
अवधेश के बालक चार सदा तुलसी मनमंदिर में बिह-रय।।[26]

भक्ति काल में भले ही बाल साहित्य की अलग से रचना नहीं की गई परंतु बाल साहित्य की मजबूत नींव हमें इस काल क्रम में दृष्टिगत होती है जिसे हम बालकोपयोगी साहित्य के रूप में स्वीकृत कर सकते हैं। भक्ति काल के कवियों ने बच्चों को भगवान के रूप में प्रस्तुत किया है उनकी यह धारणा थी कि ईश्वर का निवास बच्चों की लीलाओं में ही हमें नजर आता है और उन लीलाओ के माध्यम से ही हम ईश्वर के और निकट जाकर आनंद प्राप्त करते हैं ।इसलिए आज भी हम कृष्ण के बाल गोपाल रूप की पूजा अर्चना करते हैं "आज के अधिकांश विद्वानो का यह मानना हैं कि भक्ति काल में ही बाल साहित्य की नींव रखी गई थी।

2.3.3 रीतिकाल :

देखा जाए तो बाल साहित्य का बीज अंकुरण वास्तविक रूप से रीतिकाल में ही हुआ है।इस काल की मुख्य प्रवाह काव्य को ही माना जाता है तो बाल साहित्य की रचना भी कभी स्वरूप में ही की गई है जिसके अंतर्गत भूषण, गिरधर, रहीम

का बाल साहित्य आज के साहित्य में विशिष्ट महत्त्व रखता है इस काल के मूल्यपरक दोहे हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

गिरिधर कविराय:

साईं'बैर न कीजिए गुरु पंडित कवि यार।

बेटा, वनिता पैरिया यज्ञ करावनहार।।'

'यज्ञ करावहर राज्य मंत्री जो होई।

विप्र, परोसी, वैध आपकी तपै रसोई।

इन तेरह सो तरह दिये बनि आवै साई।।[27]

रहीम

बड़े' बड़ाई ना करें,बड़े न बोलहि बोल।

रहिमन हीरा कब कहे लाख टका मेरा मोल।।[28]'

भंडारी, घाघ, लाल बुझक्कड़ भी इसी काल के अंतर्गत जाने जाते हैं जिसमें लाल बुझक्कड़ के विषय में पंडित राम नरेश त्रिपाठी कहते हैं कि लाल उनका नाम था और बुझक्कड़ उनकी पदवी थी जिन्होंने घाघ के देखा देखी अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाया। घाघ कन्नौज के रहने वाले थे घाघ के विषय में यह चर्चा है कि वह अकबर के काल में अवतरित थे और अकबर ने ही उन्हें गांव में बसने की अनुमति दी थी। लाल बुझक्कड़ की रचनाओं में हमें हास्य मनोरंजन देखने को मिलता है यहां पर बुझक्कड़ की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है

लाल बुझक्कड़ बूझते और न बुझे कोय।

पाव में चक्की बांध के, हरीना कूदा होय।।[29]

रीतिकाल के बाल साहित्य में हम काल परिस्थिति की झलक देख सकते हैं।

2.3.4 आधुनिक काल (1843से):

आधुनिक काल में बाल साहित्य को दो काल खंडों में विभाजित किया गया एक ई . स 1843 से ई.स 1950 तक का समय दूसरा कालखंड ई. सन् 1950 से अब तक का समय आधुनिक काल में बाल साहित्य अपने उच्च शिखर पर पहुँच

चुका है। आज बाल साहित्य की मांग पूरे विश्व में हो रही है इसमें कोई शंका नहीं अगर हम बाल साहित्य को अपने गोल्डन टाइम का सफर कर रहा है ऐसा कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस काल में पद के साथ-साथ गध साहित्य में भी बाल साहित्य का समावेश देख सकते हैं। इस काल का बाल साहित्य बाल मन को केंद्र स्थान में रखकर ही लिखा जा रहा है। बाल साहित्य का बाजार इतना बड़ा और विस्तृत है कि यह आपकी आमदनी का माध्यम बन गया है भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी खड़ी बोली में बाल साहित्य संबंधी रचनाएँ की हैं उदाहरण 'अंधेर नगरी चौपट राजा' (हास्य व्यंग्य) नाटक, लोरी','चूर्ण का लड़का' आदि रचनाओं ने छोटो के साथ-साथ बड़े बूढ़ों का भी मनोरंजन प्रदान किया है । प्रताप नारायण मिश्र की गौरव 'हर- गंगे,'' मोटापा' आदि लोकप्रिय रहे हैं श्रीधर पाठक की रचना 'बाबा तुम देर देर से आए 'चिज्जी, पिज्जे कुछ ना लाए, शिशुगीत प्रसिद्ध है श्रीधर पाठक की भाषा बाल मन को भी जाने वाली है जो बच्चों का रोचक मनोरंजन उपलब्ध करवाती है।

बच्चों का जब पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा था तब इस बात पर ध्यान गया कि बाल साहित्य की मात्रा तो बहुत ही कम है तब यह समस्या बाहर उभर कर आई और उसके बाद साहित्यकारों को अधिक से अधिक बाल साहित्य रचना करने के लिए प्रेरित किया गया। उपलब्ध जानकारी के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि श्रीधर पाठक ही मनोरंजन वाले बाल गीतों की रचना स्वतंत्र रूप से की है उसके उपरांत बालमुकुंद गुप्त ने भी उसी समय काल में बच्चों के लिए कविताएं लिखना प्रारंभ किया

एल .वी जॉन्स और सत्यनारायण ने 1919 में बाल कविता लिखने की शुरुआत की थी। बालमुकुंद गुप्त की 'रेलगाड़ी' नामक कविता बहुत ही लोकप्रिय है कुछ पंक्तियाँ यहां पर दृष्टिगत है।

हिसहिस हिसहिस हिसहिस करती, रेल धड़ धड़ जाती है,
जिन जंजीरों से जकड़ी है, उन्हें खूब खड़काती आती है।

दोनों और दूर से दुनिया देख रही है बांध कतार,

धुएं के बल से जाती है, धुआं उड़ाती धुआंधार।[30]

सुप्रसिद्ध कवि अयोध्या सी उपाध्याय ने अपने एक वक्तव्य में यह दावा किया था कि वह हिंदी साहित्य में प्रथम बाल गीतकार है। 'वानर' पत्रिका के संपादक आनंद कुमार ने जब एक साक्षात्कार में पूछा था कि आप बच्चों के लिए कब से लिख रहे हैं?इसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि "बहुत दिनों से लिख रहा हूँ हिंदी में शायद बच्चों के लिए कविता लिखने वाला प्रथम कवि मैं ही हूं।"पीछे और लोग देखा देखी लिखने लगे हरि ओम जी की गणना प्रगतिशील कवियों में होती है उन्होंने 'प्रियप्रवास' की रचना की है उनके काव्य संकलन 'बाल विलास' के संबंध में 'माधुरी' नामक पत्रिका में लिखा है। हरऔध की अन्य रचनाओं में 'गिलहरी','बंदर', 'कोयल', 'जुगनू', 'बूंद' है बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण विकास की गति आधुनिक काल में ही प्राप्त हुई है। रामनरेश त्रिपाठी ने बाल साहित्य में अनेक प्रकार के प्रयोग किए हैं जिसमें उन्होंने कहानियों की भी रचना की है और उसके साथ में ही उन्होंने बाल साहित्य में गद्य साहित्य के नियम मार्ग निर्मित किया है।त्रिपाठी को हिंदी का प्रथम बरगद का मान सकते हैं बाल अधिकार के रूप में उनका कार्य अत्यंत सराहनीय और उत्कृष्ट रहा है उन्होंने बच्चों के लिए अत्यंत बाल उपयोगी रचनाओं का निर्माण किया है भारतेंदु काल को हिंदी साहित्य बाल साहित्य जागरण का काल भी कह सकते हैं वहीं द्विवेदी काल इसे और समृद्धि देता है।गद्य का उद्भव होने के साथ ही बाल साहित्य में बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल नाटक आदि का अनुभव हुआ इस काल के दौरान पत्र-पत्रिकाओं ने भी बाल साहित्य को एक तेज गति प्रदान की जिसके कारण हिंदी साहित्य में बाल पत्रिकाओं के साथ-साथ सोहर हस्तलिखित बाल पत्रिकाओं का भी आगमन हुआ। संपादक अपनी पत्रिकाओं में बाल साहित्य का समावेश करने लगे जिसका संबंध बाल समाज से रहा हों।

उसके पश्चात बाल साहित्य में अनेक महानुभाव जुड़ते गए जैसे निराला पंत, महावीर प्रसाद, द्विवेदी इनके जुड़ते ही बाल साहित्य में एक नवीन चेतना का संचार हुआ और स्वतंत्रता प्राप्ति के कारण बाल साहित्य लेखन में एक क्रांति का आरंभ हुआ।साहित्यकारों को यह समझ आ गया था कि बच्चों में ही देश का उज्जवल भविष्य निहित है इसलिए बच्चों में देश सेवा का बीज अंकुरण करने के लिए बाल साहित्यकार महत्त्वपूर्ण कर्णधार बनने के समान सामने आए।पिछले कुछ समय में बाल साहित्य का निर्माण रॉकेट की गति से आगे बढ़ रहा है बच्चों के जीवन, तन, मन पर असर करें ऐसे साहित्य का अवतरण हो रहा है जिससे बच्चों के मानस पटल का विकास सरल भाषा, जिज्ञासा, रुचि, मनोमंथन, उत्कंठा, बुद्धि, चातुर्य आदि चीजों को केंद्र में रखकर साहित्य की रचना की जा रही है जो देश के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी ताकि देश को उज्जवल भविष्य प्राप्त हो सके।

द्वितीय अध्याय

संदर्भ सूची

1. उपन्यास... उपलब्ध करवाते... BHAD (Hindi) Premchand- पृ. 6 (Odisha State Open University, Sambalpur)
2 ई.सन 1872 ... बांग्ला भाषा से हुआ I (BHAD) Hindi (प्रेमचंद) पृ. 8
3 बाबू बृजनंदन सहाय... समावेश किया गया I (BHAD) Hindi (प्रेमचंद्र) पृ, 42
4 किशोरीलाल.... अभिरुचि को बढ़ाया... (BHAD) (Hindi) प्रेमचंद, पृ. 42
5 हिंदी कथा साहित्य, www.iasbook.com
6 W.Hi.M., Wikipedia.org
7 ईकाई (23), पृ. 246
8 ईकाई (23), हिंदी उपन्यास : विकास के प्रमुख चरण, हिंदी कहानी का विकास, पृ. 247
9 वही, पृ. 247
10 वही, पृ. 247
11 हिंदी उपन्यास : विकास के प्रमुख चरण, हिंदी कहानी का विकास, पृ. 247
12 वही, पृ. 248
13 वही, पृ. 248
14 रमेशतरुण एवं माया अग्रवाल, कबीर, पृ. 108
15 कबीर वाणी, पृ. 271
16 कबीर वाणी, पृ. 271
17 कबीर वाणी, पृ. 271
18 बिहारी सतसई, दोहा 586
19 बिहारी सतसई, दोहा 676
20 धनानन्द चयनिका, संपादित डॉ. कृष्णचन्द्र वर्मा, छंद संख्या 6
21 भारतेन्दु ग्रंथावली,संपादित ब्रज रत्नदास, प्रस्तावना, दूसरा खंड, पृ. 811
22 अभा भट्ट, हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में वर्ग चेतना, पृ. 62
23 पाठभेद, मोती,ब्र., पृ. 19, वही हिर्दय, ब्र.पृ. 19
24 पाठभेद, ना मारा, ब्र.पृ. 18
25 सूरदास, सूरसागर, पृ. 793
26 कवितावली, तुलसीदास, पृ. 3
27 कुण्डलियाँ गिरिधर राय, पृ. 6, रचनाकार- गिरधर राय, प्रकाशन-नवलकिशोर प्रेस, संस्करण 1922
28 रहिम ग्रंथावली, पृ. 91. रचनाकार रहिम, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1985
29 लालबुझक्कड की सूझ, पाठ-2 (पुरानी बालभारती पुस्तक, कक्षा-2)
30 गुप्त निबंधावली, पृ. 664, रेलगाड़ी-बालमुकुंद गुप्त, संस्करण 1950, प्रकाशन गुप्त स्मरक ग्रंथ प्रकाशन समिति, कलकत्ता